हिंदी उपन्यासों की दृष्टि से शिक्षक की समाज में भूमिका

अमरीन अली*

प्राचीन काल में गुरु-शिष्य परंपरा प्रचलित थी। शिष्य, गुरु के पास आश्रम में रहकर ही विद्या अर्जित करता था। परिणामस्वरूप शिष्य को गुरु की देखरेख में जीवन बिताना पड़ता था। इससे उनमें आत्मसंयम, निष्ठा, ज्ञान, सद्‌बुद्धि, आदर्श चरित्र निर्माण, सद्‌भावना, सत्य के मार्ग पर चलने की दृढ़ शक्ति, उदारता आदि गुणों का संचार होता था। अध्यापक ही विद्यार्थी के जीवन को सँवारता है। इसलिए अध्यापक का आचरण भी विद्यार्थियों के लिए आदर्शवादी होता है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। जीवन में प्रत्येक स्तर पर सीखे गए ज्ञान के माध्यम से ही जीवनयापन किया जाता था। कहने का तात्पर्य यह है कि अध्यापक विद्यार्थी का संपूर्ण विकास करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। वर्तमान में अध्यापक की भूमिका में विस्तार हुआ है। इसलिए अध्यापक पर शिष्य के सर्वांगीण विकास का दायित्व है। इस लेख में हिंदी उपन्यासों के माध्यम से वर्तमान अध्यापक की विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास तथा उसे एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने के दायित्वों पर चर्चा की गई है। हिंदी उपन्यासों में अध्यापक की समाज के प्रति क्या भूमिका है? एवं वह समाज में व्याप्त समस्याओं का व्यावहारिक तौर पर समाधान करने का क्या प्रयास करता है? आदि। इस लेख के माध्यम से इन सभी पहलुओं पर उपन्यासकारों के मूल कथनों का उल्लेख करते हुए चर्चा की गई है।

भारत में प्राचीन समय से ही अध्यापक अथवा गुरु का विशेष महत्व रहा है। गुरु ही विद्यार्थी के जीवन की दशा एवं दिशा को निर्धारित करने में मार्गदर्शन देता आ रहा है। गुरु उसके ज्ञान में वृद्धि करने हेतु सहायता करता है। इसके साथ ही उसके जीवन को सामाजिक रूप से महत्व भी प्रदान करता है। अध्यापक ही अपनी पाठशाला में उसे नैतिक मूल्य सिखाता है। भारत में सदैव अध्यापक अर्थात् गुरु का स्थान सबसे ऊँचा समझा जाता रहा है। क्योंकि बिना गुरु के विद्यार्थी का ज्ञान अधूरा हो सकता है। गुरु ही विद्यार्थी को सही और गलत का भेद बताने वाला है। कबीर के अनुसार—

गुरु बिन ज्ञान न उपजै,
गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को,
गुरु बिन मिटे न दोष।।

जिस प्रकार गुरु के बिना ज्ञान और मोक्ष नहीं प्राप्त किया जा सकता, सत्य को नहीं पहचाना जा सकता, उसी प्रकार व्यक्ति के दोषों को दूर करने

**शोधार्थी*, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, E-3/1532 डीडीए ट्रांसिट कैंप, आनंद पर्वत, दिल्ली 110005

वाला भी गुरु ही है। बिना गुरु के व्यक्ति के मन के विकारों को दूर नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी अध्यापक के महत्व के बारे में बताती है कि, "अध्यापक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं। अतः हमारे राष्ट्र के भविष्य का भी निर्माण करते हैं। इस नेक योगदान के कारण ही भारत में अध्यापक समाज के सबसे ज़्यादा सम्मानित सदस्य थे और सिर्फ़ सबसे अच्छे और विद्वान ही अध्यापक बनते थे।" (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का भाग 5.1, पृष्ठ संख्या 30)

अध्यापक की भूमिका वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी प्राचीन काल में थी। आज अध्यापक की ज़िम्मेदारियाँ और भी बढ़ गई हैं। अध्यापक विद्यालयी कर्तव्यों के समुदाय से भी जुड़ा होता है। इसलिए अध्यापक की छवि सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी है। हिंदी साहित्य में लिखे गए उपन्यासों में अध्यापक का चरित्र-चित्रण एक आदर्शवादी अध्यापक के रूप में किया गया है। हिंदी उपन्यासों, जैसे— *सौ अजान एक सुजान* में पं. चंद्रशेखर नामक अध्यापक रूपचंद की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों को शिक्षित कर कुसंगति और दुर्गुणों से बचाता है।

किंतु समय के साथ जिस प्रकार सामाजिक स्वरूप में परिवर्तन आया है, उसी प्रकार उपन्यासों में भी शिक्षण संस्थानों के प्रति अभिव्यक्ति परिवर्तन आया है, जैसे— भ्रष्टाचार विद्यालय एवं विश्वविद्यालय के भीतर तक पहुँच गया है। शिक्षा को धन कमाने का एकमात्र साधन समझा जाने लगा है। विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में राजनीति होने लगी है। जिसने उनके वातावरण को दूषित कर दिया है। विद्यार्थियों में आदर्शों के प्रति अलगाव उत्पन्न होने लगा है। शिक्षा में मूल्यों का अस्तित्व धुँधलाता जा रहा है। इसे आधार बनाकर गोविंद मिश्र के उपन्यासों में प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था से लेकर उच्च शिक्षा व्यवस्था में बढ़ते भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं बाज़ारीकरण की आलोचना की गई है।

शिक्षा व्यवस्था पर आधारित कुछ उपन्यास हैं— *लाल पीली ज़मीन*; *पाँच आँगनों वाला घर*; *धूल पौधों पर*। *लाल पीली ज़मीन* में प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में प्रतिदिन बढ़ते भ्रष्टाचार को दर्शाया गया है। उपन्यास में खंदिया (बांदा) के स्कूल में ज़िला कलेक्टर के विरुद्ध छात्रों द्वारा किए गए आंदोलन एवं इसके साथ ही राजनेताओं द्वारा की गई भ्रष्ट राजनीति को भी दर्शाया गया है। क्षेत्रीय नेताओं द्वारा सरकारी संसाधनों पर प्रभुत्व स्थापित करना साथ ही छात्रों द्वारा आंदोलन करने से विद्यालय में राजनीति का प्रवेश होने तक का वर्णन किया गया है। हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों को कलेक्टर ऑफ़िस पर उकसाकर अराजक तत्वों द्वारा व्यवस्था को छिन्न-भिन्न किया जाता है। स्कूल में प्रिंसिपल पद की होड़ में राजनीति और उसमें मास्टर कंठी की मौत जैसी स्थितियों का आ जाना भी शामिल है। अस्सी से नब्बे के दशक की यह शिक्षा व्यवस्था जस की तस बनी हुई है।

बोर्ड के इम्तिहान में नकल, माफिया का आतंक और क्षेत्रीय नेताओं की भागीदारी, मनचले विद्यार्थियों की गुंडागर्दी जैसी स्थितियाँ दर्शाई गई हैं, जिनका लाभ स्कूल खोलने वाले नेता उठाते हैं। आज का बड़ा व्यवसाय वकीली, राजनीति और शिक्षा हो गई है। ...वकील बोस साहब कोर्ट की वकीली

© NCERT not to be republished

छोड़कर राजनेता बन जाते हैं और स्कूल के बहाने अपनी राजनीति चमकाना चाहते हैं। जिसका साथ पुलिस-प्रशासन, गाँव के मुखिया, जाति के प्रमुख और अध्यापक तथा छात्र तक देते हैं। इसी प्रकार श्रीलाल शुक्ल ने *रागदरबारी* उपन्यास की रचना की है। जिसमें शिक्षा एवं अध्यापकों का विकृत स्वरूप दर्शाया गया है। वास्तव में शिक्षा एवं अध्यापकों का जो महत्व होना चाहिए वह दिखाई नहीं देता। जब अध्यापक ही अपने स्वार्थ सिद्धि में लीन रहेंगे तो वे विद्यार्थियों को कैसी शिक्षा प्रदान कर पाएँगे। इस पृष्ठभूमि पर आधारित ये उपन्यास शिक्षण व्यवस्था में बढ़ते भ्रष्टाचार को दर्शाते हैं। ऐसे शिक्षण संस्थानों द्वारा अच्छे विद्यार्थियों एवं अच्छे नागरिकों का निर्माण नहीं हो सकेगा।

इसलिए हिंदी के रचनाकारों ने ऐसे उपन्यासों की भी रचना की है जिसमें अध्यापकों की ज़िम्मेदारी और सामाजिक दायित्व को दर्शाया गया है। एक आदर्श अध्यापक समाज को बदल सकता है। इसके विपरीत एक स्वार्थी अध्यापक आने वाली पीढ़ी को बर्बाद कर सकता है। हिंदी उपन्यासों में ऐसे अध्यापकों के चरित्र को भी दर्शाया गया है जो सच्ची लगन और मेहनत से देश में व्याप्त कुप्रथाओं एवं समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते हैं। इसी पर आधारित संजीव का उपन्यास *जंगल जहाँ शुरू होता है* में मास्टर मुरली पांडे का चरित्र, एक अध्यापक के सामाजिक योगदान को दर्शाता है। यह उपन्यास बिहार के चंपारण के गाँव की कथा को प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में डाकू समस्या को मुख्य रूप से चित्रित किया गया है। गाँव में जातिवाद और सामंतवाद के चलते गरीब किसानों का आर्थिक एवं सामाजिक शोषण निरंतर होता है। यही शोषित लोग डाकुओं के अत्याचारों के भी शिकार होते हैं। ये डाकू उनसे भोजन बनवाते हैं तथा उनका अपहरण, हत्या, बलात्कार आदि जैसे घृणित अपराध करते हैं। डाकुओं के लिए भोजन बनाने के कारण पुलिस भी उन गाँव वालों को पकड़ लेती है। तथा पूछताछ करने के लिए उन्हें मारती-पीटती है। ये लोग दोनों ओर से शारीरिक एवं मानसिक यातना भोगते हैं।

ऐसी परिस्थिति में मास्टर मुरली पांडे लोगों को निरंतर जागरूक करने का कार्य करते रहते हैं। वह लोगों में इन अत्याचारों के विरुद्ध लड़ने का साहस जगाते हैं और अंत तक मास्टर मुरली पांडे संघर्ष करते रहते हैं। इस गाँव के अधिकतर किसान इन अत्याचारों को झेलने के कारण प्रतिशोध की भावना और अपनी गरीबी के चलते डाकू बनने पर मजबूर हो जाते हैं, जो एक गंभीर समस्या है। मास्टर मुरली पांडे इस समस्या को समझते हैं तथा इसका आर्थिक एवं सामाजिक रूप से निदान ढूँढने का प्रयास करते हैं। काली नामक किसान जो जीवन में कुछ आदर्श लेकर चला था वह भी इन्हीं परिस्थितियों का शिकार बन जाता है। लेकिन परिस्थितिवश उसे उन मूल्यों और आदर्शों को तिलांजलि देनी पड़ी। इन सबका दोषी कौन है? इस पर बात करते हुए मास्टर मुरली पांडे पुलिस अफ़सर कुमार से कहते हैं कि, "इस दौर का मुख्य संकट क्या है कुमार साहब? ...यही की दूसरों को सुनने या समझने की फुर्सत या ज़रूरत हमें नहीं है। हम आदमी के एक अंश को देखते हैं, बाकी उसकी भावमूर्ति बनाकर सलटा लेते हैं। ...बाकी रहे आदर्श। तो ये भी मूल्यों की भावमूर्ति ही हैं। इन आदर्शों को लेकर हम निपट अकेले होते हैं। ज़रा हम जैसों की

© NCERT not to be republished

स्थिति का आकलन करें। जब हम काली जैसों की ट्रेजेडीज़ के लिए कुछ कर पाने में असमर्थ हैं तो उन्हें गाइड करने का अधिकार भी कहाँ बचता है हमारे पास?" इस संदर्भ से स्पष्ट होता है कि समाज में ऐसी परिस्थितियाँ विद्यमान हो जाएँ जिसमें व्यक्ति का जीवन बर्बाद होने लगे। तब उसके पास विद्रोह के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं बचता। मुरली पांडे ऐसे समाज को ही काली के डाकू बनने का दोषी मानते हैं। जहाँ उसे न्याय, रोज़गार, सम्मान आदि कुछ नहीं मिलता।

मास्टर मुरली पांडे केवल विद्यालय तक ही विद्यार्थियों को शिक्षित नहीं करते, वरन् विद्यालय के बाहर समाज को भी शिक्षित करने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। जिस प्रकार इस ग्रामीण परिवेश (चंपारण) की परिस्थितियाँ हैं, उससे स्पष्ट होता है कि वहाँ गरीबी, अंधविश्वास, डकैती, शिक्षा का अभाव, सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन आदि विद्यमान है। जिससे गाँव के लोग निकल नहीं पाते और विवशतावश उन परिस्थितियों का शिकार हो जाते हैं। गाँव के बच्चे मास्टर मुरली पांडे के शिष्य हैं। इसलिए मास्टर मुरली पांडे विद्यालय में आए सभी विद्यार्थियों के परिवारों को जानते हैं। उनकी परिस्थितियों से पूर्ण रूप से परिचित हैं। इसलिए वह उनके अभिभावकों को समय-समय पर समझाते रहते हैं।

मास्टर मुरली पांडे गाँव के लोगों में व्याप्त अंधविश्वास को समाप्त करने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। गाँव के लोग साँप काटने और बीमार पड़ने पर डॉक्टर के पास न जाकर झाड़फूँक करने वाले बाबाओं के पास जाते हैं। वह गाँव के लोगों को ऐसा न करने के लिए समझाते हैं तो गाँव के लोग उनका विरोध करते हैं। ऐसे में बीमार व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। उपन्यास में बताया गया है कि जब डाकू गाँव वालों से खाना बनवाते हैं तब भी मुरली पांडे उन्हें रोकते हुए कहते हैं, "डाकू को पोसना साँप को पोसना है।" वह स्वयं गाँव वालों को डाकुओं से बचाने के लिए फ़ोर्स बुलवाने हेतु एस.पी. साहब के पास जाते हैं। लेकिन एस. पी. साहब ने दरोगा को उसकी निष्क्रियता के लिए ट्रांसफ़र कर दिया। डाकुओं के इस अत्याचार के कारण तेरह लोग मारे जाते हैं। जिसकी भर्त्सना मास्टर मुरली पांडे '*नया हिंदुस्तान*' समाचार पत्र में एक लंबा लेख लिखकर करते हैं, "सत्ता प्रायः ही भ्रष्ट और दबंग तत्वों की चेरी होती आई है, अतः यह सवाल आम नागरिक को खुद से करने हैं कि वह कैसे ज़िंदा बच पाएँगे, कि विषाणु कितने बाहर हैं, कितने अंदर?" उपन्यास में इसी प्रकार के कई प्रसंग हैं, जो मास्टर मुरली पांडे के साहस और कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाते हैं।

इस घटना के बाद उनके विचारों में बहुत तेज़ी से परिवर्तन आता है। उन्होंने गाँव के नौजवानों और विद्यालय के विद्यार्थियों को संगठित कर एक दल का निर्माण किया— 'ग्राम सुरक्षा दल', जो अन्य गाँवों के लिए भी मिसाल बन गया और वहाँ भी ग्राम सुरक्षा दल का गठन होने लगा। जिनका कार्य रात को डाकुओं के आने पर गाँव वालों को सूचित करना और उन्हें भगाने का प्रयास करना था। इस कार्य के लिए मास्टर साहब उन विद्यार्थियों और नौजवानों को गुलेल चलाना भी सिखाते हैं। इसके अलावा वे विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से विकसित करने का प्रयास भी करते हैं। ताकि वे भावी जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें। यही बात

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बताई गई है कि, "अध्यापक सामाजिक-भावनात्मक पक्षों पर भी ध्यान देंगे जो विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से नितांत आवश्यक है।" (भाग 5.14, पृष्ठ संख्या 33)

एक अध्यापक के रूप में मास्टर मुरली पांडे अपनी पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अपने गाँव और गाँव वालों की सुरक्षा करने का प्रयास करते हैं। वह अपने विद्यार्थियों को समाज सेवा में लगाते हैं, जिससे पूरे गाँव को लाभ मिल सके। इसके संदर्भ में वह इंस्पेक्टर कुमार से कहते हैं, "जब अपराधी जनता को मोबिलाइज कर अपना उल्लू सीधा कर सकते हैं, तो हम उन्हें मोबिलाइज कर उनके और अपने बचने का तरीका क्यों नहीं ढूँढ सकते? जब अपराधी पैरलेल गवर्नमेंट्स (समांतर सरकारें) चला सकते हैं तो हम पैरलेल सेल्फ डिफेंस क्यों नहीं खड़ा कर सकते?" मास्टर मुरली पांडे के ये कार्य प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा से प्रभावित दिखाई देते हैं। जिसमें गुरु अध्यापन के अतिरिक्त अनेक सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करते थे। साथ ही, शिष्यों का चरित्र का निर्माण करने के लिए शिष्यों की कठिन परीक्षा भी लेते हैं।

यह सब मास्टर मुरली पांडे जैसे अध्यापक इसलिए कर पाते हैं, क्योंकि वह उसी गाँव में रहते हैं जिससे उनका गाँव वालों के साथ अच्छा जुड़ाव रहता है। एक स्थानीय अध्यापक स्थान विशेष और उसकी समस्याओं से भली-भाँति परिचित होता है। क्योंकि मुरली पांडे गाँव में रहकर सब कुछ जानते हैं, इसलिए वे लोगों को सही और गलत का अनुभव कराते हैं। अध्यापकों की जो समस्या अधिकतर दिखाई देती है, वह स्थानांतरण की है। जब अध्यापकों का स्थानांतरण होता है तब विद्यार्थियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी नए अध्यापक के साथ उतना उन्मुक्त होकर नहीं रह पाते हैं जितना पूर्व के अध्यापक के साथ रहते थे। उन्हें उस अध्यापक के साथ घुलने-मिलने में अधिक समय लगता है। नए अध्यापक का अध्यापन करने का तरीका, उनका व्यवहार एवं उनकी भाषा सब कुछ विद्यार्थियों के लिए नया होता है। इसलिए उन्हें सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई होती है। मास्टर मुरली पांडे विद्यार्थियों के गाँव में ही रहते हैं। इसलिए उनके और विद्यार्थियों के बीच अच्छा जुड़ाव होता है। जिससे विद्यार्थियों की भाषा को समझना और उनके स्थानीय परिवेश को समझ कर उन्हें शिक्षित करना अध्यापक के लिए सुविधाजनक हो जाता है। विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना भी अध्यापक का महत्वपूर्ण कार्य है, ताकि उनके और बच्चों के बीच सीखने-सिखाने की समझ विकसित हो सके।।

विद्यालय में वह विद्यार्थियों को पढ़ाते समय मूल्यपरक शिक्षा भी देते हैं, जैसे— बुराई का अंत बुराई से ही होता है। वे एक कविता पढ़ाते हुए युद्ध के हानिकारक परिणाम के बारे में बहुत विस्तार से समझाते हैं। मास्टर मुरली पांडे के विद्यालय में डाकुओं के बच्चे भी पढ़ने आते हैं, जिन्हें वह सबके समान ही शिक्षा देते हैं। वह विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं और युद्ध के बारे में कविता पढ़ाते हुए उन्हें समझाते हैं— "युद्ध जहाँ कहीं भी लड़ा जाता हो, मौत और तबाही के सिवा कुछ नहीं लाता। हारनेवालों के लिए भी क्षय, जीतनेवालों के लिए भी क्षय। हम अगर खुद

© NCERT not to be republished

सम्मान के साथ ज़िंदा रहना चाहते हैं तो दूसरों को भी प्यार, सम्मान और ज़िंदा रहने का हक हमें देना पड़ेगा...! यही जीवन मंत्र है। प्रेम ही खुशबू है और घृणा ही बदबू!" इस प्रकार वे विद्यार्थियों के समक्ष युद्ध का डरावना चित्रण करने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों व शांति का पाठ पढ़ाते हैं। अतः वर्तमान विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ नवाचारी विधियों, विद्यार्थियों को समझने एवं विद्यालय तथा समुदाय में जुड़ाव आदि मुद्दों के प्रति स्थानीय अध्यापकों को निरंतर प्रशिक्षित किया जाता है। क्योंकि अध्यापक ही अपने प्रयासों से समाज में बदलाव ला सकता है।

इसके साथ ही समाज या गाँव में शांति एवं सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए मास्टर मुरली पांडे पुलिस अफ़सर (प्रशासन) कुमार की मदद भी करते हैं। डाकुओं और उनकी पृष्ठभूमि को समझने के लिए कुमार को मास्टर साहब से बहुत सहायता मिलती है। अतः शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ स्थानीय गतिविधियों में भी ऐसे अध्यापकों की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में ये स्थानीय अध्यापक एक ज़िम्मेदार नागरिक और समाजसेवक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये अध्यापक स्थानीय भाषा का ज्ञान रखते हैं तथा उन्हें स्थानीय परिवेश की समझ भी होती है, उनका लोगों से प्रत्यक्ष संपर्क होता है, इसलिए वे लोगों की प्रत्येक प्रकार से सहायता करने में सक्रिय रहते हैं। इसी कारण स्थानीय विद्यालयों में स्थानीय अध्यापकों की नियुक्ति पर शिक्षा की विभिन्न नीतियों एवं आयोगों में विशेष रूप से बल दिया गया है।

उपन्यास *जंगल जहाँ शुरू होता है* में एक अध्यापक अपराध, अंधविश्वास एवं डाकुओं के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाते हुए समाज से बुराई को समाप्त करने के लिए प्रयासरत दिखाई देता है। जो विद्यालय परिसर व उसके बाहर दोनों ही क्षेत्र में सक्रिय होकर अपना कर्तव्य निभाता है। अतः हमारे समाज में इसी प्रकार के अध्यापकों की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक रूप से व्यावहारिक ज्ञान देकर उन्हें समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार कर सके और बिना किसी भेदभाव के सभी विद्यार्थियों को समान रूप से जीवन में आगे बढ़ने एवं विकास करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सके। एक जागरूक अध्यापक मास्टर मुरली पांडे की तरह होता है, जो समाज में रहकर लोगों को जागरूक करता है। विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी जागरूक करता है। पुलिस की सहायता कर एक ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य भी निभाता है।

इसी प्रकार *हमारा शहर उस बरस* उपन्यास में यूनिवर्सिटी में पढ़ाने वाले अध्यापकों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत किया गया है। शरद और हनीफ़ ऐसे अध्यापक हैं जो अपने विद्यार्थियों में समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता जैसी बुरी विचारधारा से लड़ने का साहस और समझ विकसित करते हैं। इस उपन्यास में सांप्रदायिक दंगे होना, इन दंगों के कारण सांप्रदायिक विद्वेष का बढ़ना, लोगों के बीच आपसी प्रेम, सद्भावना का लोप होना, एक-दूसरे के प्रति घृणा और शत्रुता की भावना का बढ़ना आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, शिक्षा एवं बुद्धिजीवी वर्ग इस समस्या से किस प्रकार लड़ता है? उसका सामना करता है। विश्वविद्यालय में इस विचारधारा के प्रति किस प्रकार विद्यार्थियों को जागरूक किया जाए? उस पर भी प्रकाश डाला

© NCERT not to be republished

गया है। क्योंकि आज सांप्रदायिकता विश्व में सबसे बड़ी एवं गंभीर समस्या बन चुकी है। यह समस्या सामाजिक स्तर पर एक ही देश, स्थान और गाँव के लोगों को विभाजित कर देती है। उन्हें एक-दूसरे का शत्रु बना देती है। इस समस्या के समाधान के लिए हमारी शिक्षा का क्या योगदान है? शिक्षा के माध्यम से हम किस प्रकार इन समस्याओं से लड़ सकते हैं? और किस प्रकार शिक्षा इन सांप्रदायिक शक्तियों से विश्वविद्यालय एवं अध्यापकों को बचाती है, इस पर यह उपन्यास प्रकाश डालता है।

शरद, हनीफ़ और श्रुति सांप्रदायिक दंगों में घायल लोगों को कैम्प में खाने-पीने का सामान और कपड़े देने के अतिरिक्त उनका हाल-चाल पूछते हैं तथा इसका विवरण लिखकर अखबार में छपवाते हैं ताकि लोगों में इन दंगों के प्रति घृणा उत्पन्न हो और घायल एवं मरने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हो।

शरद और हनीफ़ अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ सांप्रदायिकता फैलाने वाले मुद्दों पर चर्चा-परिचर्चा करते हैं, ताकि विद्यार्थी सभी पक्षों को समझ सकें। सांप्रदायिकता के बढ़ते आतंक के कारण हनीफ़ कक्षा में कहता है, "सोचो, यह कौन-सा इतिहास है, जो हम बना रहे हैं?...हनीफ़ की कोशिश थी कि अपनी क्लास में छिड़ती बहसों को ढाबों-रेस्त्राओं से जोड़कर खोखले का खोखलापन दिखाए। इतिहास की किताबों से जोड़कर अनसुलझाए, मगर सीधे सुलझे दिखते पूर्वाग्रह बताए।" विद्यार्थी सांप्रदायिकता पर खुलकर चर्चा करते हैं और यदि किसी प्रकार शहर में दंगे होने की खबरें आती हैं तो ये विद्यार्थी शरद और हनीफ़ के घर जाकर गंभीर चर्चा करते हैं और उन सभी तथ्यों को समझने का प्रयास करते हैं जो इस वैमनस्य को बढ़ा रहे हैं।

इस वैमनस्य को रोकने के लिए शरद समाचार-पत्र में लिखता है, "लेकिन आज अगर हम दृढ़ संकल्प और सांप्रदायिकता-विरोधी तमाम ताकतों के साथ उठें तो दक़ियानूसी तथा रूढ़िवादी ताकतों को पछाड़ देंगे। हम इस तथ्य से मुँह नहीं चुरा सकते कि अब यही एक लड़ाई है और घर बैठें चाहे सड़कों पर निकलें, हम सब इस तरफ या उस तरफ लड़ रहे हैं..." कुछ इसी प्रकार कि गतिविधियों में ये दोनों अध्यापक और इनके विद्यार्थी व्यस्त रहते हैं। ये अध्यापक विश्वविद्यालय में सद्भावना बनाए रखते हैं। दंगों और नफ़रत के दौर में ये अध्यापक हर जगह सद्भावना, सहानुभूति, प्रेम, सहयोग आदि जैसे मूल्यों का प्रचार करते रहते हैं। वे शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कर्तव्य भी निभाते चलते हैं, जिससे विश्वविद्यालय का वातावरण सहज और स्वाभाविक बना रहे और यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति भी विकृत न हो। सभी आपस में मिलकर इस समस्या को समझें एवं उसका समाधान करने के उपाय करें।

शरद और हनीफ़ दोनों प्रगाढ़ मित्र हैं, जिनकी मिसाल सब देते हैं। कठिन समय में भी दोनों मित्र साथ रहते हैं। हनीफ़, शरद के घर में किराए पर अपनी पत्नी श्रुति के साथ रहता है। इस घर में शरद के पिता भी रहते हैं, जो इन सबको अपना परिवार समझते हैं। इस घर में सब मिलकर खाते-पीते हैं और घर का वातावरण सौहार्दपूर्ण बना रहता है। इसी कारण उनकी जीवनशैली को देखकर विद्यार्थियों में भी सौहार्दपूर्ण भावनाओं एवं मानसिकता का प्रसार होता है। क्योंकि अध्यापक के चरित्र तथा जीवन का प्रभाव विद्यार्थियों पर सदैव पड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों के सामने अध्यापक का जीवन एक आदर्श होता है।

© NCERT not to be republished

जिसे देखकर विद्यार्थी अपने जीवन और चरित्र का निर्माण करता है।

शिक्षा के माध्यम से समाज को संवारा जा सकता है। यदि शिक्षा गलत दी जाए तो आने वाली पीढ़ियाँ भ्रमित हो सकती हैं। जो देश के बहुमुखी विकास में कभी सहायक सिद्ध नहीं हो सकतीं। इसलिए अध्यापकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है। जो देश के भविष्य को संवारने के लिए मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, समाज कल्याण के लिए सक्रिय होकर व्यावहारिक तौर पर जनकल्याण करने के लिए तत्पर रहते हैं। ये दोनों अध्यापक सेमिनार करते हैं जिसमें सांप्रदायिक वातावरण में लोगों में सहनशीलता, सद्भावना और एकता को बनाए रखने की अपील की जाती है। इस सेमिनार में दंगाई उन पर पत्थर फेंकते हैं। उन्हें चोट पहुँचाते हैं। यहाँ तक कि उनके घर जाकर उन्हें धमकाते भी हैं। लेकिन इसके बावजूद भी ये दोनों अपना कर्तव्य और दायित्व निभाते चलते हैं। जिससे विद्यार्थियों में भी साहस, निर्भीकता एवं सच के साथ दृढ़ता से खड़े रहने की भावना जाग्रत होती है और उन्हें अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी का अनुभव भी होता है।

यही विद्यार्थी अपने अध्यापकों के साथ काम करते हैं और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप से अपनाते हैं। ये विद्यार्थी ढोंगी धर्म के ठेकेदारों के चरित्र को समाज के सामने रू-ब-रू करने का प्रयास भी करते हैं। एक सेमिनार में प्रोफ़ेसर नन्दन विद्यार्थियों और अध्यापकों से कहते हैं, "हमारे देश में जो हो रहा है, किसी से छिपा नहीं है। यह जनवाद और सांप्रदायिक फासीवाद की लड़ाई छिड़ी है और हम सब जानते हैं कि हम किस तरफ हैं। यह संघर्ष बहुत व्यापक होगा। हम सबको अपने-अपने हलक़ों में कोशिश करनी होगी, जिससे हमारे समाज में यह आवाज़ एकजुट होकर बुलंद हो। सब देशभक्त नागरिकों का आज यह फर्ज़ है...इस डिपार्टमेंट ने हर मौके पर अपना तरक्की पसंद, उदार, प्रतिबद्ध मुखड़ा रौशन किया है। हमें आज फिर मिलकर काम करना है अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक। हम बुद्धिजीवी हैं और लिखने-पढ़ने के ज़रिए जो कर सकते हैं, करेंगे। इसलिए आज हम यहाँ जमा हुए हैं। क्यों न मिलकर हम सब एक प्रोजेक्ट तैयार करें। क्या करें, कैसे करें, सब लोग अपने-अपने सुझाव दें।"

इस प्रकार यह डिपार्टमेंट अपना सामाजिक दायित्व निभाता है। दंगों में पीड़ित हुए लोगों को किस प्रकार सहायता दी जा रही है, इसका भी निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार करने की ज़िम्मेदारी डिपार्टमेंट के सभी अध्यापक और विद्यार्थी लेते हैं, "हम कुछ हैडिंग्स तैयार करें जैसे पुलिस की भूमिका, दवाएँ, डॉक्टरों की दिक्कतें, अफ़वाहों की भूमिका, अखबारों की ज़िम्मेदारी...और आठ-आठ, दस-दस के ग्रुप बनाकर इन पर थोड़ी रिसर्च कर डालें। चाहें तो अपने-अपने मोहल्लों में ही शुरू करें। पुलिस कब पहुँचती है, उसके क्या पूर्वाग्रह हैं, ज़ख्मी अस्पतालों तक किन मुश्किलों से पहुँचते हैं, वहाँ क्या रवैया है, क्या कमियाँ हैं, भागे हुए लोगों के जो कैम्प लगे हैं, उधर क्या चल रहा है वगैरह-वगैरह। ...और यह रिपोर्ट हमें प्रशासन, अखबारों, जहाँ-जहाँ हो सके, देनी है ताकि रॉयट-मैनेजमेंट में मदद मिले।" इस प्रकार

© NCERT not to be republished

की गतिविधियों में विद्यार्थियों को लगाने से उनमें फ़ील्ड वर्क करने की आदत बनती है। जिससे सामाजिक कार्य करने का अनुभव भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही, उनमें साहस भी बढ़ता है। क्योंकि यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। अतः प्रत्येक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय को ऐसे ही आदर्शों पर चलना चाहिए। केवल विद्यालय एवं विश्वविद्यालय के भीतरी परिसर में ही नहीं बल्कि उसके बाहर भी अध्यापकों की ज़िम्मेदारी बनी रहती है।

निष्कर्ष

हिंदी उपन्यासों में अध्यापक और विद्यार्थियों के संबंध, शिक्षा पद्धति, सामाजिक दायित्व, एक ज़िम्मेदार नागरिक बनना तथा बनाना एवं देश के विकास हेतु जनकल्याणकारी कार्यों में सहयोग देना आदि का वर्णन किया गया है, जो आज के अध्यापक की भी ज़िम्मेदारी है। इसे अध्यापकों को निभाना होगा। इसके साथ ही विद्यार्थियों को केवल पुस्तक ज्ञान न देकर उनकी सृजनात्मक बुद्धि का विकास करना होगा। उन्हें समाज में विद्यमान समस्याओं के प्रति भी जागरूक करना तथा व्यावहारिक धरातल पर उन समस्याओं का सामना करने के लिए भी तैयार करना है। अतः विद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर ऐसे जुझारू अध्यापकों की बहुत आवश्यकता है। तभी हम देश को महात्मा गांधी और अंबेडकर के सपनों का देश बना सकेंगे।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

अपनी माटी. 18 मार्च, 2021 को http://www.apnimaati.com/2019/03/blog-post_17.html?m=1, से प्राप्त किया गया है.

भक्ति योग दर्शन. 9 मार्च, 2021 को https://www.bhaktiyogdarshan.com/dohe/kabir-dohe-guru-mahima-meaning.html से प्राप्त किया गया है.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, भाग– 5.1, 5.14. पृष्ठ संख्या 30, 33. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

श्री, गीतांजली. 2016. *हमारा शहर उस बरस*. पृष्ठ संख्या 28–29, 33, 41–43. राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.

संजीव. 2015. *जंगल जहाँ शुरू होता है*. पृष्ठ संख्या 67, 70, 72, 74–75, 144. राधाकृष्ण प्रकाशन. नयी दिल्ली.